शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय, वाड्रफनगर

जिला - बलरामपुर-रामानुजगंज (छ.ग.)

वार्षिक पत्रिका

अभ्युदय

2022

सत्र 2021-2022

अंक - तृतीय

वार्षिक पत्रिका

अभ्युदय 2022

संरक्षक एवं संपादक

श्री सुधीर कुमार सिंह

सह–संपादक

श्री सुरेश कुमार पटेल

संयोजक

डॉ. तोयज शुक्ला

सम्पादकीय सदस्य

श्री शिवनंदन शुक्ला

प्रकाशन प्रकोष्ठ

शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय, वाड्रफनगर

बलरामपुर (छ.ग.)

www.govtcollegewadrafnagar.ac.in

उमेश पटेल
मंत्री
छत्तीसगढ़ शासन
उच्च शिक्षा, कौशल विकास,
तकनीकी शिक्षा एवं रोजगार,
विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल एवं युवा कल्याण विभाग

मंत्रालय कक्ष क्रमांक - एम1-12
महानदी भवन, नवा रायपुर अटल नगर, रायपुर 492002 (छ.ग.)
फोन : 0771-2510316, 2221316
नि.: डी-1/2, शासकीय आवासीय परिसर, देवेन्द्र नगर, रायपुर
फोन : 0771-2881030
ग्राम व पोस्ट नंदेली, जिला रायगढ़ कार्यालय : 7000477747

क्रमांक : B/1592

दिनांक : 18/11/2022

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर, जिला बलरामपुर–रामानुजगंज द्वारा वार्षिक पत्रिका ''अभ्युदय'' का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका में महाविद्यालय की सम्पूर्ण जानकारी, विभिन्न गतिविधियों तथा प्रबुद्ध आध्यापकों के सृजनात्मक गुण तथा छात्र–छात्राओं के विचार एवं प्रतिभा को प्रदर्शित किया जायेगा।

आशा है कि यह पत्रिका छात्र–छात्राओं के लिए ज्ञानवर्धक और उपयोगी साबित होगी।

पत्रिका प्रकाशन के लिए महाविद्यालय परिवार को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(उमेश पटेल)

प्रति,

प्राचार्य
शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय
वाड्रफनगर,
जिला बलरामपुर–रामानुजगंज (छ.ग.)

प्रो. अशोक सिंह
कुलपति
संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय, सरगुजा
अम्बिकापुर (छ.ग.) पिन - 497001 (भारत)
फोन : 07774-222788, फैक्स : 07774-222790
फोन : 07774-223509

Prof. Ashok Singh
Vice Chancellor
Sant Gahira Guru Vishwavidyalaya, Sarguja
Ambikapur (C.G.) Pin - 497001 (India)
Email : vcssggu@gmail.com
Email : ashoksinghhbhu@gmail.com

क्रमांक : 118 / कु.स. / 2022

अम्बिकापुर, दिनांक : 19.10.2022

शुभकामना संदेश

प्रिय आत्मन,

देश की आजादी का अमृत महोत्सव का यह वर्ष जन–जन की चेतना को स्वतंत्रता संग्राम के संघर्ष की महान गाथाओं, महापुरूषों की स्तुतियों एवं उनकी मूल प्रेरणाओं से जोड़ने का अवसर है । अमृत काल का लक्ष्य एक ऐसे आत्मनिर्भर भारत का निर्माण है, जहाँ दुनिया का हर आधुनिक बुनियादी ढ़ॉचा भारत में हो और शिक्षा के क्षेत्र में सर्वांगीण विकास हो। मुझे पूर्ण विश्वास है कि शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय, वाड्रफनगर, जिला–बलरामपुर–रामानुजगंज (छ.ग.) की वार्षिक पत्रिका **''अभ्युदय''** के तृतीय अंक में शिक्षा जगत् और राष्ट्र गौरव से जुड़े ऐसे रोचक–अनुकरणीय प्रसंगों और शिक्षा प्रद आलेखों का समावेश किया जायेगा, जो युवा पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए प्रेरणादायक होगा।

मैं महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **''अभ्युदय''** के सफल प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

भवदीय

अशोक सिंह

(अशोक सिंह)

प्रति,

प्राचार्य
शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय
वाड्रफनगर,
जिला बलरामपुर–रामानुजगंज (छ.ग.)

प्राचार्य संदेश

यह महाविद्यालय सुदूर आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में स्थित होने के बाद भी हमारे लिए गौरव की बात है कि सरगुजा संभाग के बलरामपुर जिले में सर्वाधिक विद्यार्थियों वाला महाविद्यालय है। यहाँ अध्ययनरत् विद्यार्थियों की प्रतिभा और व्यक्तित्व को निखारने के लिए महाविद्यालय प्रशासन, प्राध्यापकगण, जनभागीदारी समिति निरंतर प्रयासरत् है साथ ही महाविद्यालय गुणवत्तापूर्ण शैक्षणिक वातावरण प्रदान करने के लिए आधारभूत संरचनाओं को सुव्यवस्थित एवं विकसित करने की दिशा में अग्रसर है। महाविद्यालय की गतिविधियों को समाज तक पहुँचाने, अभिव्यक्ति कौशल, लेखन कला, रचनात्मकता को विकसित करने एवं रचनाशील शिक्षकों, विद्यार्थियों को एक नया आयाम प्रस्तुत करने के लिए महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका ''अभ्युदय'' का प्रकाशन महाविद्यालय के विकास की दिशा में एक ओर कदम है साथ ही अधिकारियों, कर्मचारियों, छात्र–छात्राओं से विनम्र अपील है कि महाविद्यालय को निरंतर नयी ऊँचाईयों पर पहुँचाने का प्रयास करें एवं आप इस प्रयास में विनम्रता, अनुशासन, धैर्य एवं नैतिक मूल्यों को बनाये रखें साथ ही महाविद्यालय की गरिमा को बढ़ाते हुए राष्ट्र निर्माण में योगदान दें।

"You cannot change your future, but you can change your habits,
and surely your habits will change your future."

- सुधीर कुमार सिंह

शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अभ्युदय' के तृतीय संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका अपने नाम के अनुरुप ही सुदूर आदिवासी बाहुल्य ग्रामीण अंचल के छात्र–छात्राओं को अंधकार रूपी अज्ञानता से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर, अर्थात् 'उदय की ओर' लेकर जाने वाली सिद्ध होगी, जैसे सूर्य के उदय होने से प्रकाश हो जाता है, वैसे ही यह पत्रिका विद्यार्थियों में रचनात्मकता, अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करने, विद्यार्थियों की मौलिक रचनाओं को नया आयाम प्रदान करने एवं लेखन कला विकसित कर उन्हें प्रकाशित करने के साथ ही महाविद्यालय की वर्ष भर की गतिविधियों की जानकारी भी लोगों तक पहुँचाने में सहायक होगी। यह महाविद्यालय की महज आधिकारिक पत्रिका ही नहीं बल्कि 'अभ्युदय' का आधार बनेगी।

महाविद्यालय के विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

– संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

01.	महाविद्यालय का परिचय	01
02.	महाविद्यालयीन कार्यक्रमों की झलकियाँ	02
03.	महाविद्यालयीन कार्यक्रमों की झलकियाँ	03
04.	महाविद्यालयीन कार्यक्रमों की झलकियाँ	04
05.	मेरा सपना-मेरा लक्ष्य	05
06.	विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्व	06
07.	भारत के सामाजिक समस्याएँ	07
08.	Mahua : A Paradise Tree For The Tribals	08
09.	कठोर परिश्रम ही सफलता की कुंजी है	09
10.	हिन्दी भाषा : स्वाभिमान और गर्व की भाषा है	10
11.	Brighter Scope In Radio Physics	11
12.	भारतीय राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय	12
13.	जीवन में खेल का महत्व	13
14.	महाविद्यालय का पहला दिन	13
15.	अहु का काम के	14
16.	वार्षिक प्रतिवेदन	15
17.	वीरांगना रानी दुर्गावती का संक्षिप्त परिचय	16
18.	आत्मविश्वास	17
19.	पंखो की उड़ान	17
20.	राष्ट्रीय सेवा योजना में मेरा योगदान	18
21.	मेहनत रंग लायी	19
22.	सपनो में उड़ान भरो	19
23.	इंसान को खोखला करता अंधविश्वास	20
24.	छत्तीसगढ़ के प्रचलित लोकगीत	21
25.	माता-पिता	22
26.	हिम्मत	22
27.	युवा वर्ग पर फैशन का प्रभाव	23
28.	हौसला	24
29.	मेरी ख्वाहिश	24
30.	मेरा बचपन	25
31.	मैं नारी हूँ	25
32.	वनों की कटाई पर रोक-थाम	26
33.	किसान की शान	27
34.	प्रकृति श्रृंगार	27
35.	आधुनिक नारी, परिंदा, लड़की पराई क्यों	28
36.	ज्ञान	29
37.	बढ़े-चलो	29
38.	प्यारी माँ	30
39.	मेरे बाबा	30
40.	हमारे आदर्श	31

महाविद्यालय का परिचय

शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर सरगुजा जिला मुख्यालय से उत्तर की ओर 90 किलोमीटर की दूरी पर राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है, जिसका कुल क्षेत्रफल 11684 वर्ग मीटर है। इसकी भौगोलिक स्थिति 23 अंश उत्तरी अक्षांश तथा 83 अंश पूर्वी देशान्तर है। यह महाविद्यालय वाड्रफनगर तहसील/ब्लॉक दो राज्य उत्तर प्रदेश एवं मध्यप्रदेश सीमा से लगी हुई है। शासकीय स्नातक महाविद्यालय वाड्रफनगर की स्थापना 01.07.1989 में हुई है। प्रारम्भ में इस महाविद्यालय की कक्षाऐं 30 छात्र/छात्राओं के साथ शासकीय उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय वाड्रफनगर में संचालित हो रही थी। वर्ष 1994 में यह महविद्यालय प्राथमिक शाला गौटियापारा विद्यालय में स्थानान्तरित हो गया। इस महाविद्यालय का नामकरण सत्र् 2005 में रानी दुर्गावती के नाम पर किया गया जो गोंडवाना राज्य की रानी थी। यह बहुत ही वीर एवं साहसी थीं। इन्होनें मुगलों से अपने राज्य की रक्षा के लिए वीरता साहस तथा शौर्य के साथ युध्द की तथा अंत में वीरगती को प्राप्त हुई। जबलपुर में स्थित जबलपुर विश्वविद्यालय का नाम भी रानी दुर्गावती के सम्मान में सत्र 1983 बदलकर रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय किया गया था।

स्थापना के समय यह महाविद्यालय मध्यप्रदेश शासन के द्वारा संचालित होता था। तथा सरगुजा जिला, बिलासपुर संभाग के अन्तर्गत गुरु घासीदास विशविद्यालय, बिलासपुर से संबद्ध था। छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना वर्ष 2000 में होने के बाद यह महाविद्यालय छत्तीसगढ़ राज्य के उच्च शिक्षा विभाग रायपुर द्वारा संचालित होने लगा तथा वर्ष 2005 में इस महाविद्यालय को नवीन भवन मिला और इसी भवन में आज तक महाविद्यालय संचालित हो रहा है। वर्ष 2008 में इस महाविद्यालय की संबद्धता सरगुजा विश्वविद्यालय, सरगुजा, अम्बिकापुर से हो गयी। शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर वर्ष 2012 में बलरामपुर जिले में सम्मिलित हो गया तथा इस महाविद्यालय का संचालान 2018 में परिवर्तित नाम संत गहिरा गरु विश्वविद्यालय सरगुजा, अम्बिकापुर से हो रहा है।

शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर की स्थापना के समय इस महाविद्यालय में छः विषयों में कला संकाय संचालित हो रहा था। वर्तमान में आठ विषयों में कला संकाय संचालित हो रहा है तथा इस संकाय में प्रवेश के लिए 300 सीटें निर्धारित हैं। शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर में विज्ञान संकाय सत्र 2005 से संचालित हो रहा है जिसमें गणित व जीव विज्ञान दोनों संकाय संचालित हो रही हैं। विज्ञान संकाय में प्रवेश के लिए गणित में 100 सीट तथा 200 सीट जीव विज्ञान के लिए निर्धारित है। सत्र 2020–21 से दो नये संकाय (वाणिज्य संकाय एवं बी.सी.ए. संकाय) भी संचालित हो रहे हैं।

वर्तमान में महाविद्यालय में वानस्पतिक उद्यान का निर्माण हुआ जिसमें छात्रों के जानकारी के लिए विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधे लगाये गये है तथा छत्राओं के स्वास्थ्य तथा सुरक्षा की दृष्टि से सैनिटरी नैपकिन वेंडिंग मशीन लगाया गया है तथा साथ– ही–साथ छात्र–छात्राओं के शारीरिक विकास के लिए अत्याधुनिक खेल मैदान को विकसित किया गया है। महाविद्यालय में शैक्षणिक गतिविधियों को उन्नत बनाने के लिए नियमित सहायक प्राध्यपकों की संख्या में वृद्धि हुई, जिससे छात्र– छात्राओं में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए संगोष्ठी, सेमिनार, कार्यशला, रोजगार परक शिक्षा, आधुनिक तकनीकी शिक्षा तथा दक्षतापूर्ण कौशल विकास के लिए महाविद्याालय निरंतर अग्रसर है, यहॉ डिजिटल क्लास रुम, अत्याधुनिक लैब एवं पुस्तकालय है। महाविद्यालय में छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति, नृत्य, गीत–संगीत को बढ़ावा देने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन होता है। सत्र 2021–22 में महाविद्यालय का नैक मूल्यांकन पहली बार कराया गया।आने वाले समय में महाविद्यालय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा विद्यार्थियों के सर्वागीण विकास के लिए निरंतर प्रतिबद्ध रहेगा।

महाविद्यालयीन कार्यक्रमों की झलकियाँ

महाविद्यालयीन कार्यक्रमों की झलकियाँ

महाविद्यालयीन कार्यक्रमों की झलकियाँ

मेरा सपना- मेरा लक्ष्य

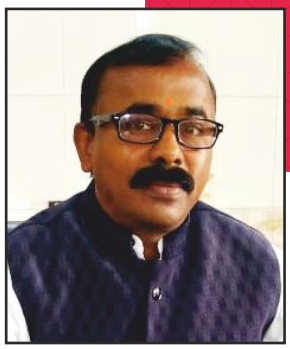

सुरेश कुमार पटेल
सहायक प्राध्यापक (प्राणीशास्त्र)

''ये मेरे सपने ही तो हैं, जो हौसला खोने नहीं देते हैं। दिन में चैन नहीं लेते और रातों को सोने नहीं देते हैं।।''

हर व्यक्ति अपने जीवन में कुछ न कुछ बनना चाहता है, हर व्यक्ति अपना लक्ष्य निर्धारित करता है जिसे सपना कहते हैं।

सपना वो नहीं होता जो हम सोते वक्त रात में देखा करते हैं, बल्कि सपनें वह होते हैं जो नींद उड़ा देते हैं। सपने हमारे भविष्य को संवारने में अहम् भूमिका निभाते है। यह ठीक ही कहा गया है कि यदि आप इसकी कल्पना कर सकते हैं तो आप इसे प्राप्त कर सकते हैं।

किसी ने सही कहा है कि यदि हम अपनी हार होने पर भी हम अपने सपनों को पाने की ज़िद को कायम रखते है तो हमें अपने जीवन में कामयाब होने से कोई नहीं रोक सकता। हमें अपने सपने को प्राप्त करने के अल्पकालिक और दीर्घकालिक योजना बनाना चाहिए जिससे हम अपने लक्ष्य की ओर आसानी से बढ़ सकें। हमें अपने जीवन में कुछ अलग करने के लिए चलना होगा और उस पर अपने सम्पूर्ण जीवन को लगा देना चाहिए। अपने जीवन में केवल एक ही लक्ष्य होना चाहिए।

अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सकारात्मक लोगों के बीच रहना होगा तभी आपको आपकी मंजिल प्राप्त होगी आपको अपना आत्मविश्वास, जोश, जुनून तथा उसे प्राप्त करने की एक आग होनी चाहिए तभी सफलता प्राप्त होगी। कभी-कभी प्रेरणा की कमी मुख्य कारणों मे एक है जो किसी व्यक्ति को अपने सपने को पीछे छोड़ने के लिए मजबूर करती है, तो प्रेरित रहना भी लक्ष्य को पूरा करने में मदद करता है।

मैं अपने करियर में ऐसा काम करना चाहता हूँ जिससे मेरा, मेरा गाँव, मेरे राज्य व मेरे देश का नाम हो ताकि आगे आने वाली पीढ़ियाँ भी पढ़कर जो देश की सेवा में योगदान देवें। मैं हर समय यह सपना देखता हूँ किसी ने मेरे देश के लिए बहुत अच्छी पंक्तियाँ लिखी है।

देश हमें देता है सबकुछ हम भी तो कुछ देना सीखें,
पथिकों को तपती दुपहर में, पेड़ सदा देते हैं छाया,
सुमन सुगंध सदा देते हैं, हम सबको फूलों की माला
औरों का भी हित हो जिसमें, हम ऐसा कुछ करना सीखें।।

हम अपने सपनों को साकार करने के लिए ईमानदारी, सच्ची निष्ठा के साथ आगे बढ़ना चाहिए अपने इस लक्ष्य के लिए किसी की आत्मा को ठेस न पहुचायें।

**"वर्तमान की कड़ी से कड़ी ऐसे जोड़ो, कि एक मजबूत जंजीर बन जाएँ।
भविष्य की चिंता ना करनी पड़े, मेहनत इतनी करो की तकदीर बन जाएँ।।"**

विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्व

डॉ. तोयज शुक्ला
सहायक प्राध्यापक (रसायनशास्त्र)

अनुशासन शब्द के अर्थ का अनुमान हम इसे लिखे जाने के तरीके से ही लगा सकते हैं। यह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना हुआ है, अनु + शासन। अनु का अर्थ है - पालन और शासन का अर्थ होता है - नियम। जिसका अर्थ होता है नियमों का पालन करना।

आसान शब्दों में कहें तो, अनुशासन का दूसरा अर्थ होता है, जो व्यक्ति अपने जीवन में नियमों का पालन करके अपना जीवन बिताता है उसे 'अनुशासन' कहा जाता है।

अनुशासन हमारे जीवन में काफी अहमियत रखता है। यह जीवन में क्रमबद्धता को संदर्भित करता है, जो किसी के भी जीवन मे सफलता के लिए आवश्यक है। हर कोई अपने जीवन में अलग-अलग रुप में अनुशासन का पालन करता है। अनुशासन हमें ईमानदार, मेहनती, धैर्यवान, महत्वाकांक्षी, स्वतंत्र और समयनिष्ठ बनाता है। अनुशासन के बिना जीवन बिना रडार के जहाज के समान है।

अनुशासन के बिना विद्यार्थी जीवन की कल्पना करना काफी कठिन है। महाविद्यालय / विद्यालय जाने का महत्वपूर्ण कारण यही होता है कि एक बच्चे के अंदर अनुशासन का पालन करने की इच्छा उत्पन्न की जाए। अनुशासन में रहने वाले विद्यार्थी ही अच्छा प्रदर्शन कर पाते हैं। ऐसे विद्यार्थी हर शिक्षक की नजर में रहते हैं और हर वक्त प्रशंसा पाते हैं। जो विद्यार्थी अनुशासनहीन होता है उसे कोई पसंद नहीं करता। अनुशासनहीन व्यक्ति जीवन में ईर्ष्या, हिंसा, असत्य, बड़ो से झूठ बोलना, बड़ों का आदर न करना, अपने गुरु का आदर न करना, गलत संगत में फसना आदि से ग्रसित हो जाता है। इस प्रकार से अनुशासनहीन विद्यार्थी अपने जीवन को बर्बादी की राह पर ले जाते हैं। अनुशासनहीन व्यक्ति बुरे गुणों के आदी हो जाते हैं।

छात्रों को एक महान व्यक्ति तथा सफल होने के लिए अपने जीवन में अनुशासन में रहना और नियमों का पालन करना चाहिए क्योंकि बिना अनुशासन के छात्र जीवन अधूरा होता है और हम अपने जीवन में सफलता भी प्राप्त नहीं कर सकते। अनुशासन ही व्यक्ति के व्यक्तित्व की पहचान होती है अनुशासन के बिना व्यक्ति भटक जाता है तथा गलत कार्यों को करने लगता है। इसलिए विद्यार्थी जीवन में सबसे आवश्यक चीजें जो उसे महान व्यक्ति बनाती है वह है अनुशासन। अनुशासन ही एक अच्छे एवं महान व्यक्ति के जीवन का आधार है इसलिए इसका पालन करना सभी के लिए आवश्यक है।

"अनुशासन में जो रहे, आगे बढ़ता जाय।
समय कदर इसकी करे, सब कुछ ले वो पाय।।"

भारत के सामाजिक समस्याएँ

जगदीश कुमार खुसरो
सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र)

भारत एक विशाल देश है, जहाँ विभिन्न धर्मो, जाति व वेश-भूषा धारण करने वाले लोग निवास करते हैं। दूसरे शब्दों मे कहें तो अनेकता में एकता हमारी पहचान और हमारा गौरव है परन्तु अनेकता अनेक समस्याओं की जननी भी है। जाति, भाषा, रहन-सहन व धर्मिक विभिन्नताओं के बीच कभी-कभी सामंजस्य स्थापित करना दुष्कर हो जाता है। विभिन्न धर्मो व साम्प्रदायों के लोगों की विचार-धाराएँ भी विभिन्न होती है। देश में व्याप्त प्रांतीयता, भ्रष्टाचार, भाषावाद, सम्प्रदायवाद या जातिवाद इन्हीं विभिन्नताओं का दुष्परिणाम है। इसके चलते आज देश के लगभग सभी राज्यों मे दंगा-फसाद, मार-काट, लूट-खसोट आदि के समाचार प्रायः सुनने व पढ़नें को मिलते हैं।

नारी के प्रति अत्याचार, दुराचार व बलात्कार का प्रयास हमारे समाज की एक शर्मनाक समस्या है। प्राचीनकाल में जहाँ नारी को देवी तुल्य समझा जाता था आज उसी नारी की भावनाओं को दबाकर रखा जाता है। पुरुष का अहं उसे अपने समकक्ष स्थान देने के लिए विरोध करता है। दहेज प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियाँ आज भी नारी को कष्टमय व असहाय जीवन जीने के लिए बाध्य करती है। केवल अशिक्षित ही नहीं अपितु हमारे कथित सभ्य शिक्षित समाज में भी दहेज का जहर व्याप्त है। प्रतिदिन कितनी ही भारतीय नारियाँ दहेज प्रथा के कारण मनुष्य की बर्बरता का शिकार हो जाती है अथवा जिंदा जला दी जाती है।

अंधविश्वास व रुढ़िवादिता जैसी सामाजिक बुराई देश की प्रगति को पीछे धकेल देती है। अंधविश्वास व रुढ़िवादिता हमारे नवयुवकों को भाग्यवादित की ओर ले जाता है फलस्वरुप वे कर्महीन हो जाते हैं। अपनी असफलताओं मे अपनी कमियों को ढूंढनें के बजाये वे इसे अपनी भाग्य की परिणति का रुप देते हैं।

जातिवाद की जड़ें समाज में बहुत गहरी हो चुकी है। ये समस्याएँ सदियों पुरानी है, इनके परिणाम स्वरुप समाज में विषमताएँ देखने को मिलती है जो देश के विकास के लिए बाधक है। इसके अतिरिक्त भाई-भतीजावाद समाज में असमानता व अन्य समस्याओं को जन्म देती है।

देश में अशिक्षा और निर्धनता हमारी प्रगति के मार्ग की सबसे बड़ी रुकावट है, ये दोनो ही कारक मनुष्य के सम्पूर्ण बौद्धिक और शारीरिक विकास में अवरोध उत्पन्न करते हैं, जब समाज में अशिक्षा और निर्धनता व्याप्त है तब कोई भी देश वास्तविक रुप में विकास नहीं कर सकता है। भ्रष्टाचार भी हमारे देश में जटिल समस्या का रुप ले चुका है। सामान्य कर्मचारी से लेकर ऊँचे-ऊँचे पदों पर आसीन अधिकारी तक सभी भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। जिस देश में नेतागण भ्रष्टाचार में ढूबे हुए होंगे तो सामान्य व्यक्ति उससे परे कब तक रह सकता है। देश मे महंगाई तथा कालाबाजारी के जहर का स्वच्छंद रुप से विस्तार हो रहा है।

इन समस्याओं का हल ढूंढना केवल सरकार का ही दायित्व नहीं है अपितु यह पूरे समाज तथा समाज के सभी नागरिकों का उत्तर दायित्व है। इसके लिए जनजागृति आवश्यक है जिसमें लोग जागरुक बनें व अपने कर्तव्यों को समझें। देश युवाओं व भावी पीढ़ी पर यह जिम्मेदारी और भी अधिक बनती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि समाज में व्याप्त इन सामाजिक बुराईयों व समाज के हर तबके के साथ समानता का व्यवहार उनके हर समस्याओं को मिल जुलकर सुलझाने का प्रयास करना आवश्यक है। आज के युवा पीढ़ी को और ज्यादा सजग रहने की आवश्यकता है आज सोशल मीडिया का उपयोग समाज में अस्थिरता फैलाने का काम ज्यादा हो रहा है इसलिए आज न केवल शिक्षित बल्कि हमें जागरुक होने की भी आवश्यकता है जिससे समाज में फैले इन सामाजिक समस्याओं को जड़ से समाप्त किया जा सके।

"समस्या एक – मेरे सभ्य नगरों और ग्रामों में सभी मानव सुखी, सुन्दर व शोषणमुक्त कब होंगे?" – (मुक्तिबोध)

MAHUA : A PARADISE TREE FOR THE TRIBALS

DR. BALRAM SAHU
Assistant Professor (Botany)

Mahua (*Mdhuca indica* Gmel.; *M. latifolia Roxb.; M. longifolia Koen.*) belonging to family Sapotaceae, is a medium sized to large side tree. The bark of the plants is dull black with vertical cracks, leaves broadly elliptic and clustered near the end of the branches, Flowers are cream coloured, sweet scented, drooping, and rusty tomentose, and clustered near the apices of the leafless branches. Fruits are ovoid and greenish that turning reddish yellow or orange when ripe. Seeds are brown, ovoid, shining and 1-4 per fruits. The flowers appear in the months of March and April and fruits in the months of May and June. It is found in mixed deciduous forests usually of a some what dry type and is common throughout Chhattisgarh but mostly in North and South region of Chhattisgarh. Mahua plays an important role in the social life and economy of tribal's in Chhattisgarh as well as Madhya Pradesh. It fulfils many of their requirements such as food for survival, medicine for alleviating ailments and disease. drinks for locals, oil for cooking, fodder for cattle, timber for construction, *etc.*

The flowers of Mahua fall on the ground in showers during March and April. They are collected mostly by tribal women and children and process them. Flowers shrink in size and turn reddish brown in colour. The characteristic od our increases after drying. Mahua flowers are edible and used in making different type of tribal edible items like, Sara lata, Rasa kutka. Kurli mahua and local drinks. Mahua fruits (locally called 'Dori) ripen in May-June. Theripen fruits are collected and seeds are separated and then dried and shelled to get kernel. The krnels are crushed to extract oil which is used for edible and cooking purpose in tribal are as.It s laxative and considered useful in habitual constipation and piles. It is also used in skin disease, rheumatism and headache and oil cake is used as manure.

Almost all parts of the plants are used by tribal communities in various ailments and disease. The root paste is given to treat stomach ulcer and is also applied on scorpion sting. The bark decoction is gargled in case of gum swelling, given to diabetes and rheumatic disease. The bark is astringent and tonic. The flower paste is applied to take out the pierced thorn. The fruits paste is used in toothache. The seed oil is massaged over the chest in the treatment of pneumonia. The seed cake is used in snake bite. Leaves with salts are given to livestock to kill the worms of wound. The smoke of the cake is believed to keep snake away. Thus on the basis of the above facts and multifarious uses. Mahua can be regarded as a paradise tree for the tribals of Chhattisgarh and keystone species for conservation of biodiversity.

“mahua is A Saviour of Tribal's Population, Culture And Economy"

कठोर परिश्रम ही सफलता की कुंजी है

रेवती प्रसाद
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)

''कर्मशक्ति तथा इच्छा शक्ति प्राप्त करो और कठोर परिश्रम करो,

तो तुम निश्चित लक्ष्य पर पहुंच जाओगे''

यह संसार उसका है जो परिश्रमी है। मनुष्य का जीवन समस्याओं से घिरा हुआ है, एक समस्या समाप्त होती है, तो दूसरी सामने आ खड़ी होती है, लेकिन जो परिश्रमी होते हैं वे अपनी समस्याओं को बहुत सावधानी से सुलझा लेते हैं और जीवन में सफल होते चले जाते हैं। मानव जीवन संघर्षो के लिए है, संघर्षो के बाद उसे सफलता मिलती है। मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं विधाता है जो अपने जीवन में जितना परिश्रमी रहा हैं, जितना अधिक से अधिक संघर्ष और कठिनाईयाँ उठाई और अंत में उसने सफलता प्राप्त की। विद्यार्थी जीवन किसी भी व्यक्ति के जीवन का स्वर्णिम काल होता है। भावी जीवन की नींव इसी में पड़ती है। परिश्रम ही इस काल की नींव को मजबूत करने का प्रथम प्रयास है। एक विद्यार्थी के जीवन में परिश्रम का उतना ही महत्व है जितना खाने में नमक का। जो छात्र पढ़ाई में परिश्रम करता है वही छात्र ही परीक्षा में पास होता है। परिश्रमी छात्र ही समाज में विशिष्ट स्थान पाते हैं। निरंतर परिश्रम के माध्यम से ही कोई छात्र भीड़ से उठकर कलेक्टर, इंजीनियर, डॉक्टर, प्रोफेसर, महान कलाकार, शिल्पकार एवं महान वैज्ञानिक बन सकता है।

परिश्रम पर पूर्ण आस्था रखने वाले छात्र ही प्रतिस्पर्धाओं में विजयी प्राप्त करते हैं। परिश्रमी छात्र के समक्ष जब उसके परिश्रम का फल आता है जो उसे आत्मिक शांति मिलती है। उसका हृदय पवित्र हो जाता है, उसे सच्चे ऐश्वर्य और आत्म गौरव की भी प्राप्ति होती है। श्रम केवल व्यक्तिगत शक्ति ही नहीं, वह एक सामूहिक वरदान भी है, देश की उन्नति एवं विकास के लिए एक व्यक्ति का नहीं पूरे राष्ट्र का श्रम चाहिए। हमें तब तक श्रम करते रहना चाहिए जब तक हम अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर लेते। इसलिए उन्नति, विकास और समृद्धि के लिए यह आवश्यक है कि सभी मनुष्य परिश्रमी बनें।

हिन्दी भाषा : स्वाभिमान और गर्व की भाषा है

शिवनन्दन शुक्ला
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

हिन्दी ने हमें विश्व में एक नई पहचान दिलाई है। हिन्दी भाषा को संविधान में राजभाषा का पद 14 सितम्बर 1949 को अनुच्छेद 343 के तहत स्वीकृति मिली। हिन्दी विश्व में बोले जाने वाली प्रमुख भाषाओं मे से एक है। विश्व की प्राचीन, समृद्ध और सरल भाषा होने के साथ-साथ हिन्दी हमारी ''राष्ट्रभाषा'' भी है। वह दुनिया भर में हमें सम्मान भी दिलाती है। यह हमारे सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की भाषा है। हिन्दी भाषा की उन्नति और विकास के लिए भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने सही हीं लिखा है -

निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति कौ मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय के सूल।।

भारत की स्वतंत्रता के बाद 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने एकमत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी की खड़ी बोली ही भारत की राजभाषा होगी। इसी महत्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से सम्पूर्ण भारत में प्रतिवर्ष 14 सितम्बर को ''हिन्दी दिवस'' के रुप में मनाया जाने लगा।

हिन्दी भाषा का महत्व धीरे-धीरे बढ़ रहा है और इस भाषा ने राष्ट्रभाषा का स्वरुप धारण कर लिया है। धीरे-धीरे यह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी लोक मान्य और पसंद की जा रही है। आज यह भाषा विश्व में बोली जाने वाली भाषाओं में तीसरी स्थान पर है। अपनी भाषा के विकास होने से हमारी संस्कृति, सभ्यता, संस्कारों का विकास होता है। आज विश्व के कोने-कोने से विद्यार्थी हमारी भाषा और संस्कृति को जानने के लिये भारत आते हैं। विदेशी विद्वानों ने हमारी हिन्दी भाषा का बहुत ही गौरवपूर्ण वर्णन किया है जिसमें फादर कामिल बुल्के का नाम सम्मान से लिया जाता है जिन्होंने अपना जीवन हिन्दी भाषा और राम कथा के शोध में बिता दिया।

महात्मा गाँधी ने अपनी मातृभाषा के विकास और उन्नति के लिए अथक प्रयास किया जिसका परिणाम आज दिखाई दे रहा है। आज कश्मीर से कन्याकुमारी तक, साक्षर से निरक्षर तक प्रत्येक वर्ग का व्यक्ति हिन्दी भाषा को आसानी से बोल-समझ लेता है। यही इस भाषा की पहचान भी है कि इसे बोलने और समझने में किसी को कोई परेशानी नहीं होती है।

आजकल अंग्रेजी बाजार के चलते दुनिया भर में हिन्दी जानने और बोलने वाले को अनपढ़ या गंवार के रुप में देखा जाता है यह बहुत बड़ी भूल है बिना अपनी मातृभाषा के ज्ञान और समझ के कोई भी विद्वान नहीं हो सकता। आचार्य प्रताप नारायण मिश्र ने ठीक ही कहा है - ''सब मिल बोलो एक जबान, हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान।

अंत में यही कहना है कि आज हर माता-पिता अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा के लिए अच्छे स्कूल में प्रवेश दिलाते है, इन स्कूलों मे अंग्रेजी भाषा पर विशेष ध्यान दिया जाता है लेकिन हिन्दी भाषा को उदासीन नजर से देखते हैं जैसे वे अपनी माँ को छोड़कर दूसरे की माँ को अपनी माँ मान बैठे हैं। यह आज के समय में बड़ी समस्या है। कोई भी भाषा बड़ी या छोटी नहीं होती है सभी भाषाओं का सम्मान करना चाहिए तथा अपनी भाषा में बात करने पर गर्व और स्वाभिमान महसूस करना चाहिए। गोस्वामी तुलसी दास ने निज भाषा (लोक भाषा) में कविता लिखी है -

''का भाषा का संस्कृत, प्रेम चाहिए साँच।
काम जु आवै कामरी, का लै करिअ कुमाँच।।''

BRIGHTER SCOPE IN RADIO PHYSICS

Mr. Bhagwat Patel
Assistant Professor (Physics)

Radio-Physics is one of the latest interdisciplinary medical subjects of physics that focuses on the experimental and theoretical study of radiations and their interaction, propagation and emission for the purpose of their use in the health sector. Radio-Physics is the study of variations in radio waves, and other ranges of electromagnetic radiation. Some of the applications of Radio-Physics are in the field of radiology, radio-astronomy, radio location and radio communication. Some of the branches of Radio-Physics are Statistical Radio-Physics, Quantum Radio-Physics and Classical Radio-Physics.

BARC (DAE; Department of Atomic Energy) conducts various training programmes for students and researchers in Radio-Physics. BARC training schools and its affiliates conduct a one-year orientation programme for graduates and postgraduates (OCES), a new scheme called the DAE Graduate Fellowship Scheme, with the objectives of human resources development and collaborative research, and nuclear/radiation orientated applications expertise development for qualified personnel. Courses offered by BARC are 1. Diploma in Radio-Physics (DRP); 2. Diploma in Radiation Medicine Training Course (DRM). The above course covers BSc physics science graduates as well as MBBS degree holders. The curriculum comprises anatomy, pathology, physiology, microbiology, ophthalmology, ENT, medicine and allied specialities, and surgery and allied specialities.

In recent years, the demand for qualified Radio-Physicist is increasing with the increasing number of radiotherapies centres. Radio-Physics has applications in the field of research, the agriculture industry, nuclear medicines, therapy and diagnostics. These all fields are experiencing a dearth of qualified Radio-Physicist professionals with the ability to safely handled radiation instruments. Radio-Physics subject offers students the ability to handle radiation safely. These professionals can find jobs in several organizations, and candidates with qualified degrees in Radio-Physics can find a very good jobs with higher pay scales.

" Imagination is more important than knowledge whereas imagination embraces the entire world, stimulating progress giving birth to evolution."

भारतीय राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय

पंकज कुमार
ग्रंथपाल

भारत का राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय सीखनें के संसाधनों का एक आभासी भण्डार है। जो न केवल खोज करने की सुविधा देती है साथ ही सूचना का एक विशाल भण्डार भी रखता है। यह डिजिटल पुस्तकालय पाठ्यपुस्तकें, लेखों, विडियो, ऑडियो पुस्तक, व्याख्यान और भी बहुत सी सेवायें प्रदान करती है। राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय को सभी प्रकार के उपयोगिताओं जैसे - छात्रों (सभी स्तर के), शिक्षकों, शोधकर्ताओं, पुस्तकालयाध्यक्षों, पेशेवरों, विकलांग उपयोगकर्ताओं और अन्य सभी आजीवन शिक्षार्थियों के लाभ के लिए डिजाईन किया गया है। राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय के माध्यम से खोजन या ब्राउज करने के लिए कोई अपनी पसंद की भाषा का चयन कर सकता है। वर्तमान में यह पुस्तकालय हिन्दी, अंग्रेजी, असमिया, बंगाली, मराठी, तेलुगु आदि अन्य भाषाओं (कुल 10 भाषाएँ) में उपयोक्ता अंतरपृष्ठ प्रदान करती है।

यह सूचना और संचार प्रोद्योगिकी के माध्यम से शिक्षा पर राष्ट्रीय मिशन के तहत भारत सरकार की एक परियोजना हैं।

यह राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय हर विषयों जैसे - विज्ञान, मानविकी, इंजिनियरिंग, कानून, प्रबंधन, साहित्य एवं स्कूल शिक्षा से संबंधित विषयों पर ई-शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराता है।

कोविड–19 अनुसंधान भण्डार :–

यह खण्ड कोविड-19 वैश्विक महामारी पर अनुसंधान और सूचना के लिए समर्पित है, इसमें इस मुद्दे पर पत्रिकाओं और विद्वानों के प्रकाशनों सहित सूचनात्मक दस्तावेज का एक संग्रह है।

चुनिंदा संग्रह :-

यह साप्ताहिक आधार पर लोकप्रिय विषयों और प्रसिद्ध हस्तियों को समर्पित खण्ड है। इस डिजिटल लाईब्रेरी को किसी भी व्यक्ति, किसी भी समय और कही से भी राष्ट्रीय डिजिटल लाईब्रेरी का उपयोग कर सकता है। यह निःशुल्क है और ''पढ़े भारत, बढ़े भारत'' के संदर्भ में सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। आई.आई.टी. खडगपुर ने भारतीय राष्ट्रीय डिजिटल लाईब्रेरी को विकसित किया है, इसका एप्प भी प्ले स्टोर में मौजूद है।

संदर्भ :-

1- Drishtiias.com/hindi/Dily-updates/daily_News-analysis/prelims-part20-06-2018
2- Wikipedia.org
3- Ndl.ootkgp.ac.in

"डिजिटल लाईब्रेरी वह जगह है, जहाँ अतीत, वर्तमान से मिलता है, और भविष्य बनाता हैं"

अशोक एक्का
क्रीडाधिकारी

जीवन में खेल का महत्व

सफल और सुखद भविष्य के लिए मनुष्य का स्वस्थ और ऊर्जावान होना अति आवश्यक है। अरस्तु के अनुसार ''स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है।'' खेल एक बहुत ही अच्छी शारीरिक गतिविधि है जो शरीर को स्वस्थ बनाकर तनाव और चिन्ता से मुक्ति प्रदान करता है। खेल व्यक्तिगत लाभ के साथ ही पेशेवर लाभ के लिए भी खेल सकते हैं। दोनो ही तरीकों से, यह हमारे शरीर, मस्तिष्क और आत्मा को लाभ पहुंचाता है।

खेल हमारे लिए बहुत ही लाभदायक है क्योंकि खेल हमें समयबद्धता, धैर्य, अनुशासन, समुह में कार्य करना और लगन सिखाता है। खेल हमें आत्मविश्वास के स्तर का निर्माण करना और सुधार करना सिखाता है। यदि हम खेल का नियमित अभ्यास करें, तो हम अधिक सक्रिय और स्वस्थ रह सकते हैं।

चरित्र और स्वास्थ्य निर्माण के लिए नियमित आधार पर खेल खेलना एक व्यक्ति के चरित्र और स्वास्थ्य निर्माण में मदद करता है। यह आमतौर पर देखा जा सकता है कि युवा अवस्था से ही खेल में शामिल रहने वाला एक व्यक्ति बहुत ही साफ और मजबूत चरित्र के साथ ही अच्छे स्वास्थ्य को विकसित करता है, खिलाड़ी बहुत अधिक समय के पाबंद और अनुशासित होते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि खेल राष्ट्र और समाज के लिए विभिन्न मजबूत और अच्छे नागरिक प्रदान करता है।

"खेलने कूदने का लो संकल्प,
स्वस्थ रहने का यही विकल्प"

मो. अलताफ बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

महाविद्यालय का पहला दिन

हमारे जीवन में कई बार ऐसा समय आता है जब हम कोई कार्य पहली बार कर रहे होते हैं तो काफी अजीब सा लगता है और हम अलग-अलग वातावरण में अलग लोगों के बीच में आते हैं तो हमें कुछ दिनों तक अच्छा लगता है ऐसा ही मेरे साथ हुआ था जब मेरा महाविद्यालय का पहला दिन था।

मेरा उस महाविद्यालय में दोस्त भी नहीं था जैसे ही मैं महाविद्यालय में अंदर प्रवेश किया मैनें चारों ओर मेरे जैसे कई विद्यार्थियों को देखकर मैं कुछ देर इधर-उधर टहलने लगा फिर मुझे बहुत ही खुशी अनुभव हुआ मैं महाविद्यालय में आगे बढ़ा तो देखा दो मंजिला था इधर नीचे बहुत सारे कमरे बने हुए थे लेकिन मुझे अभी तक पता नहीं था मेरा कक्षा कहाँ है। मैं एक विद्यार्थी से पूछा कि मेरा कक्षा क्रमांक क्या है, फिर उन्होंने कक्षा क्रमांक बताया।

मैं उस कक्षा की ओर जाने लगा वहाँ पर बहुत सारी टेबलें लगी हुई थी, टेबल क्रमबद्ध लगी हुई थी, 50 से ज्यादा टेबलें थी। बहुत सारे विद्यार्थी कक्षा में बैठे हुए थे, मैं देखा कि एक टेबल पर एक लड़का था, मैं उसके साथ बैठ गया, जिससे मेरी थोड़ी सी दोस्ती हुई। मैनें जाना कि वह पास के ही एक शहर से पढ़ाई करने आया है। उसे महाविद्यालय में 03 दिन हो चुका था, मैनें उससे महाविद्यालय के बारे में जाना, यहाँ के प्राध्यापकों के बारे में जाना तो मुझे थोड़ा अच्छा लगा। मुझे महाविद्यालय का पहला दिन बहुत ही अच्छा लगा, धीरे-धीरे समय निकलता गया और फिर कक्षा में हमारे शिक्षक आये, शिक्षक ने अपना परिचय दिया और हम सभी का बारी-बारी से परिचय हुआ। क्लास रुम में सभी छात्रों से परिचय हुआ जानने के बाद काफी खुश हुआ।

"अहु का काम के"

गाड़ा बिना धुरा के
खटिया बिना खुरा के
देवार बिना सूरा के
अहू का काम के

पेंड़ बिना पान के
खेत बिना धान के
आदमी बिना कान के
अहु का काम के

आदमी बिना पेट के
हसिया बिना बेट के
समधी बिना भेंट के
अहु का काम के

बरा बिना दार के
घेंच बिना हार के
तरिया बिना पार के
अहु का काम के

साग बिना लौकी के
घर बिना डउकी के
बेलना बिना चौकी के
अहु का काम के

गाड़ा बिना भईसा के
दुनिया बिना पईसा के
रोटी बिना अइरसा के
अहु का काम के

संतरा बिना चानी के
राजा बिना रानी के
नहर बिना पानी के
अहु का काम के

नदिया बिना सागर के
खेत बिना नांगर के
आदमी बिना जांगर के
अहु का काम के

भौंरा बिना बांटी के
गोड बिना साटी के
राऊत बिना लाठी के
अहु का काम के

आदमी बिना ज्ञान के
घर बिना सियान के
लईका बिना धियान के
अहु का काम के

आदमी बिना हांसी के
महल बिना दासी के
बटकी बिना बासी के
अहु का काम के

घर बिना मुखिया के
गुरु बिना लइका के
कॉलेज बिना अनुशासन के
अहु का काम के

यशपाल गौतम
अतिथि व्याख्याता

छत्तीसगढ़ी विचार :
सपना अहु लक्ष्य मा एकेच अंतर हे
सपना बर बिना मेहनत के नींद चाही
फेर लक्ष्य बर, बिना नींद के मेहनत।

वार्षिक प्रतिवेदन

कु. सुषमा कुशवाहा
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

प्रत्येक सत्र एक निश्चित समय से प्रारंभ होकर अपने निश्चित समय पर समाप्त होता है, लेकिन वर्तमान सत्र कोरोना महामारी के कारण जुलाई से प्रारंभ नहीं हो सका। अधिकांश गतिविधियाँ ऑनलाईन के माध्यम से चल रही थी, जिसमें छात्र-छात्राओं ने कोविड गाईडलाइन का पालन करते हुए विभिन्न गतिविधियों मे सहभागिता का पूर्ण निर्वाहन करते रहे।

कोरोना के प्रकोप को ध्यान में रखते हुए छत्तीसगढ़ शासन के आदेशानुसार नवम्बर माह के मध्य में भौतिक रुप से ऑनलाईन कक्षाएँ संचालित होने लगी। पुनः इस महामारी के प्रकोप को देखते हुए विद्यार्थियों की सुरक्षा को ध्यान में रख कर ऑनलाइन, ऑफलाइन कक्षाएँ संचालित होती रही। इस दौरान महाविद्यालय का नैक मूल्यांकन होना था। नैक मूल्यांकन होना महाविद्यालय के लिए बहुत ही अद्भुत पहल था क्योंकि स्थापना वर्ष 1989 से 2022 में नैक के लिए महाविद्यालय का प्रथम चरण था। जिसके लिए महाविद्यालय में तैयारियाँ जोर-शोर से चल रही थी। मार्च के प्रथम सप्ताह में महाविद्यालय का नैक मूल्यांकन हुआ। तत्पश्चात् मार्च के मध्य में वार्षिक खेलोत्सव का आयोजन किया गया। जिसमें छात्र-छात्राओं ने प्रत्येक प्रतियोगिता में बढ़-चढ़कर भाग लिया। इसी तारतम्य में मार्च माह के अंत में महाविद्यालय में वार्षिकोत्सव व पुरस्कार वितरण का आयोजन किया गया। जिसके मुख्य अतिथि के रुप में स्कूल शिक्षा मंत्री, छत्तीसगढ़ शासन, डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम जी थे। माननीय मंत्री जी का आगमन महाविद्यालय परिवार व छात्र-छात्राओं के लिए दिया स्वप्न के रुप में था। छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम को माननीय मंत्री जी द्वारा सराहना की गई। पुरस्कार वितरण के दौरान पुरस्कृत छात्र-छात्राओं व सभी महाविद्यालयीन विद्यार्थियों को खेल-कूद तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किए। मंत्री जी द्वारा प्राप्त अनुदान राशि से निर्मित साइकिल स्टैंड का उद्घाटन किये। महाविद्यालय द्वारा नैक दौरान आधारभूत संरचना के बारे में प्रोत्साहित किए।

महाविद्यालय की अन्य गतिविधियाँ अकादमिक कैलेण्डर के अनुसार संचालित हो रही थी।

"हमें ऐसी शिक्षा चाहिए, जिसमें चरित्र का निर्माण हो। मन की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य अपने पैर पर खड़ा हो सके।"

वीरांगना रानी दुर्गावती का संक्षिप्त परिचय

सतरुपा पटेल
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

''चन्देलों की बेटी थी, गौडवानें की रानी थी चण्डी थी, रणचण्डी थी, वह दुर्गावती भवानी थी।''

भारत के इतिहास में महिलाओं की शौर्यगाथा, कौशल, पराक्रम, वीरता जैसे कितने ही गुणों का योगदान रहा।

भारत की महिलाएँ कभी भी कमजोर नहीं रही। भारत में कई विरांगनाओं ने जन्म लिए, उनमें रानी दुर्गावती का प्रमुख स्थान है, वह एक साहसी, कुशल योद्धा व स्वाभिमानी महिला थीं।

रानी दुर्गावती का जन्म 05 अक्टूबर 1524 को दुर्गाअष्टमी के दिन बाँदा जिले के कालिंजर के ''राजा कीर्ति सिंह चंदेल'' के यहाँ हुआ था। रानी दुर्गावती तीर व बन्दूक चलाने में अत्यंत निपुण थीं। इन्होंने इलाहाबाद के मुगल शासक ''आसफ खाँ'' से लोहा लिया था। इनके राज्य का नाम गोंडवाना था तथा गोंडवाना साम्राज्य के राजा संग्राम शाह ने अपने पुत्र ''दलपत शाह मडावी'' का विवाह दुर्गावती से करवा दिया। इनके विवाह को 04 वर्ष हुए ही थे कि इनके पति का स्वर्गवास हो गया और तब इन्होंने अपने 03 वर्षीय पुत्र ''नारायण'' का देखभाल अकेले ही किया तथा स्वयं गढ़मंडला का शासन सम्भाला। रानी दुर्गावती ने कई सामाजिक कार्य किये जैसे - कई कुएँ, मठ, बावडी तथा धर्मशाला बनवाई।

मालवा के शासक बाजबहादुर ने कई बार रानी दुर्गावती के राज्य पर हमला किया किन्तु वह हर बार पराजित हुआ। इसके बाद अकबर ने भी गोंडवाना पर हमला किया लेकिन उसकी पराजय हुई। इसके बाद स्वयं रानी दुर्गावती ने पुरुष वेश में युद्ध का नेतृत्व किया, जिसमें 3000 मुगल सैनिक मारे गये थे।

24 जून 1564 को पुनः युद्ध हुआ और इस युद्ध में मुगलों द्वारा रानी को तीर लगने पर वे घायल हो गयीं और अंतिम समय जानकर उन्होंने अपने वजीर आधार सिंह से कहा कि वह अपनी तलवार से उनकी गर्दन कलम कर दें लेकिन आधार सिंह ने ऐसा करने के लिए उनसे मना कर दिया, तब उन्होंने अपनी कटार भोंककर अपना बलिदान कर दिया, ताकि वे घायल अवस्था में मुगलों के हाथ ना आयें।

''जन-जन में रानी हीं रानी, वह तीर थी तलवार थी, भालों और तोपों की वार थी, फूफकार थी, हुंकार थी, शत्रु का संहार थी।'' जौहर :-

रानी की मृत्यु से 'आसफ खाँ' अत्यंत बौखला गया था, क्योंकि वह रानी को अकबर को भेंट स्वरुप देना चाहता था। इस कारण उसने राजधानी चौरागढ़ पर आक्रमण कर दिया, तब वहाँ कर महिलाओं ने अपने सम्मान के लिए जौहर के अग्नि कुण्ड में अपने आपको समर्पित कर दिया, लेकिन 'आसफ खाँ' के आगे नहीं झुकीं।

वास्तव में रानी दुर्गावती पराक्रम व वीरता की मिसाल थीं वे स्त्रीत्व के लिए एक आदर्श थीं और आज भी है। आज भी भारत वर्ष उनके द्वारा दिये गये बलिदान को याद करता है।

"चन्देलों की बेटी थी, गोंडवाने की रानी थी,
चण्डी थी रणचण्डी थी, वह दुर्गावती भवानी थी।।"

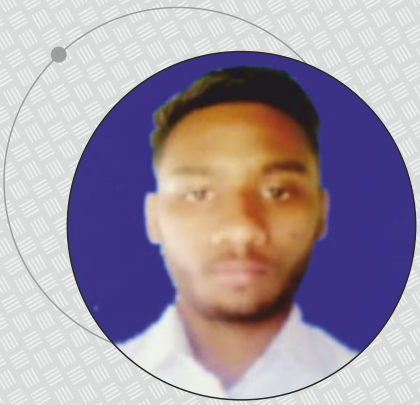

परमेश्वर दयाल
बी.ए. द्वितीय वर्ष

आत्मविश्वास

ये आसमां गया तो क्या ?
नया ढूंढ लेंगे,
हम वो परिंदे नहीं जो,
उड़ान छोड़ देंगे ।
मत पूछ हौसलें हमारे,
आज कितने विश्रब्ध है,
एक नई शुरुआत, नया आरंभ तय है
मानी अभी हम निःशब्द है ।
ये पारावार छूट गया तो क्या ?
नय सागर ढूंढ लेंगे,
हम वो कस्तियाँ नहीं जो
तैरना छोड़ देंगे ।
कदम चलते रहेंगे . . .
जब तक सांस है परिस्थिति से परे,
स्वयं पर हमें विश्वास है ।
एक रास्ता मिला नहीं तो क्या ?
नई राह ढूंढ लेंगे,
हम वो मुसाफिर नहीं जो,
जो चलना छोड़ देंगे ।
ख्वाबों को महकता रखते है,
हम मंजिलों से वास्ता रखते हैं ।
नशा हमे हमारी फितरत का,
हर हार करती है बुलंद . . .
इरादा जीत का ।
ये मुकाम नहीं हासिल तो क्या ?
नये ठिकाने ढूंढ लेंगे,
हम वो साया नहीं जो, अपनी तलाश छोड़ देंगे ।

दिव्या गुप्ता
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

पंखो की उड़ान

आसमां को छूने की चाह तो हम भी रखते हैं,
पर क्या करें, ये पंख फैलनें से डरते हैं ।
इन पंखों को उड़ान देकर तो देखो,
ये पंख किस तरह से खिलते हैं ।
ये पंख नही, सपने हैं हमारे,
जो हमेशा उड़नें की ताक में रहते हैं,
पर क्या करें, ये पंख फैलने से डरतें है ।
ये दुनिया तो आसमां को देखती है,
पर हम उसे छूने की चाह रखते हैं,
पर क्या करें, ये पंख फैलने से डरते हैं ।
पंखों से नहीं, हौसलों से उड़ान होती है,
हिम्मत करो पंखो को फैला कर तो देखो ।
आसमां खुद उस चाह को पूरा करता है,
पर क्या करें, ये पंख फैलने से डरतें है ।

राष्ट्रीय सेवा योजना में मेरा योगदान

कु. अंशु कुशवाहा
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

मैं शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय वाड्रफनगर में कक्षा बी.एससी. अंतिम वर्ष की छात्रा हूँ। मैनें जब महाविद्यालय में प्रवेश लिया था उस समय संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियों से प्रेरित होकर पंजीयन कराया।

तत्पश्चात् राष्ट्रीय सेवा योजना के इन तीन वर्षो में मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला, मैंने राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत होने वाले गतिविधियों में अपना पूरा योगदान दिया। जब मुझे नियमित गतिविधियों के साथ सात दिवसीय विशेष शिविर में जाने का अवसर मिला तब महाविद्यालय का विशेष शिविर ग्राम कोल्हुआ में लगा था और उस ग्राम को बेहतर बनाने में मैंने एक स्वयं सेविका के रुप में अपनी भूमिका अदा की, इस सात दिवसीय विशेष शिविर के दौरान मेरा बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक व्यक्तित्व का विकास हुआ।

विश्व में फैले कोरोना महामारी के दौरान मैंने एक स्वयं सेविका के रुप में कई गतिविधियाँ की, कोविड-19 से बचाव के लिए मैंने घर की दीवारों पर स्लोगन लिखकर लोगों को जागरुक करने का प्रयास किया साथ ही पोस्टर बनाकर लोगों को कोविड से होने वाले नुकसान के बारे में अवगत कराने का विशेष प्रयास किया। कोविड-19 के समय मैंने स्वयं मास्क बनाकर जरुरतमंद लोगों को वितरित करके उनकी मदद की, उन्हें सैनिटाइजर का उपयोग करने के बारे में बताया ताकि हमारे देश में फैली कोरोना महामारी को दूर किया जा सके।

हमारे महाविद्यालय में हो रहे नैक मूल्यांकन की तैयारियों के समय मैंने एक स्वयं सेविका के रुप में अपनी सहभागिता का पूर्ण निर्वाहन किया। मैंने महाविद्यालय के शिक्षकों एवं स्वयं सेवकों और छात्रों के साथ मिलकर वानस्पतिक उद्यान में श्रमदान किया तथा विभिन्न प्रकार के पौधों का रोपण किया। इसके अतिरिक्त मैंने सांस्कृतिक कार्यक्रम में भी भाग लिया इस दौरान पोस्टर, रंगोली, मॉडल बनाएं। मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। महाविद्यालय में नैक मूल्यांकन के दौरान हमारी पूरी सहभागिता रही।

इस प्रकार मैं स्वयं सेविका के रुप में कार्यरत रही, इससे मेरे सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकस हुआ। आज मैं गर्व से कह सकती हूँ कि मैंने विगत 03 वर्षो में राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़ी रही एवं कार्यक्रम अधिकारी के समक्ष रहकर जिस कार्य और शिक्षा को मैंने ग्रहण किया वह मेरे लिए बहुत ही आनन्द दायक रहा है। मेरे अंदर निःस्वार्थ समाज सेवा का भाव भी विकसित हुआ।

अतः मैं आप लोगों को बताना चाहती हूँ कि अगर आप महाविद्यालय में अध्ययनरत् हैं तो राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई में जरुर जुड़ें इससे आपके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास होगा तथा समाज को जागरुक करने का मौका भी मिलेगा।

मेहनत रंग लायी

नहीं बनाया किसी ने टाटा, बिरला, अंबानी,
खुद हीं बने हैं सब अपने सपनों के सौदागर।
राह नहीं थी बनी-बनाई, ना ही है कोई बड़ा ज्ञानी,
सबने करी है कड़ी मेहनत, फिर है मेहनत रंग लायी।
एक पल मैं नहीं बनता सब-कुछ,
पल-पल मेहनत करके सब ने मंजिल है पाई।
कल क्या होगा ना ध्यान दिया, बस काम किया,
राह में मुश्किल उनके भी आयी।
मुश्किल था मंजिल को पाना, बना दिया रास्ता,
चल दिया बिना किये किसी की परवाह।
सुना है उन्होंने भी ताना-बाना,
लेकिन फितूर चढ़ा था कुछ पाने का।
तोड़ दिया सबका भ्रम, कर दिया सपनों को साकार,
ताना देने वालों ने ही हँसकर किया सत्कार।

अंजु प्रजापति
बी.एससी. तृतीय वर्ष

सपनो में उड़ान भरो

कुछ काम करो न मन को निराश करो,
पंख होंगे मजबूत, तुम सपनों मे साहस भरो,
गिरोगे लेकिन फिर से उड़ान भरो, सपनों में उड़ान भरो।
तलाश करो मंजिल की, ना व्यर्थ जीवन दान करो,
जग में रहकर कुछ नाम करो, अभी शुरुआत करो,
सुयोग बीत न जाए कहीं, सपनों में उड़ान भरो।
समझो खुद को, लक्ष्य का ध्यान करो,
यूँ ना बैठकर बीच राह में, मंजिल का इंतजार करो,
संभालो खुद को यूँ ना विश्राम करो, सपनों में उड़ान भरो।
उठो, चलो, आगे बढ़ो, मन की आवाज सुनों,
खुद के सामने साकार करो, अपना भी कुछ नाम करो,
इतिहास के पन्नों में अपना नाम दर्ज करो, सपनों मे उड़ान भरो।
बहक जाये अगर कदम, तो गुरु का ध्यान करो,
तुम पा ना सको ऐसी कोई मंजिल नहीं,
हार-जीत का मत ख्याल करो,
अडिग रहकर लक्ष्य का रसपान करो, सपनों मे उड़ान भरो।
''मंजिल उन्हें मिलती है, जिनके सपनों मे जान होती है,
पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।''

नीतु सिंह
बी.एस.सी.तृतीय वर्ष

इंसान को खोखला करता अंधविश्वास

विकेश कुमार
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

आज हमारी आजादी को इतने साल हो गये हैं लेकिन क्या गुलामी से आजादी होना ही आजादी है, क्या हम मांसिक रुप से आजाद हैं ? आज दुनिया को देखा जाये तो दुनिया आधुनिकीकरण के दौर में पहुंच गई है यदि पीछे मुड़ कर देखा जाए तो लगता है हमने कितना विकास कर लिया है लेकिन क्या औद्योगिकीकरण और मशीनीकरण से बढ़ता बाजार क्या इन्हीं सब को अपना कर हम अपने आप को विकसित मानते हैं, जी नहीं। इन सभी को लेकर तो विकास होगा ही लेकिन हमारे देश की जो सबसे बड़ी कमजोरी है वह है अंधविश्वास। अंधविश्वास का प्रकोप इतना भयंकर समाज में फैल रहा है कि इनसे सामाजिक बुराईयों का, अपहरण, बलात्कार, लड़कियों को बेचने का धंधा बढ़ता ही जा रहा है। यह ऐसे विकास करने वाले देश में हो रहा है जहाँ समाज दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है।

कारण :–
इस अंधविश्वास का कारण है अशिक्षा लेकिन क्या जो शिक्षित है वह अंधविश्वास का कारण नहीं हैं। आज समाज में शिक्षित हो या अनपढ़ सभी अंधविश्वास के चपेट में आ रहे हैं।

अंधविश्वास क्या होता है :–
जिसमें लोगों को भगवान का डर बता कर आगे आने वाले भविष्य के बारे में डरा कर अपनी ओर समाहित करके उनकी ज्ञानेंद्रियों को नियंत्रित करना।
अंधविश्वास को आपातकाल के उदाहरण से और अच्छे से समझ पायेंगे जैसे बाबा राम रहीम, निर्मल बाबा, आसाराम बाबा इन सभी चपेट में दुनिया के ऐसे अंधविश्वास के कारण यह अंधविश्वास ही था इन बाबाओं के पास कुछ नहीं था यह एक मामूली इंसान थे लेकिन यह हमारी बेवकूफी थी उनको अंधविश्वास के कारण हमने इतना महत्व दिया कि हम तो गरीब बन गये लेकिन इन बाबाओं के पास कोठी पर कोठी बन गये तथा अत्यंत दुष्कर्म किए। इस अंधविश्वास के चपेट में ज्यादातर औरतें आती है क्योंकि वह बहुत जल्दी अंधविश्वास की चपेट में आ जाती हैं। अगर घर की महिला अंधविश्वास होगी जो घर में बहुत महत्वपूर्ण होती है वह भी अंधविश्वासी हो जायेगा और ऐसे समाज अंधविश्वास के घेरे में फंस रहा है इससे सामाजिक परिवेश कितना खराब हो गया है घर के संबंध इतने बिगड़ गये हैं कि उनको सुधारने के लिए लोग बाबाओं के पास जाते हैं।
यह गलत है, हमे अंधविश्वास की चपेट में नहीं आना चाहिए इससे हमारा देश अंदर से खोखला बनते जा रहा है। इस अंधविश्वास से मुक्ति का हल है कि घर में खुशी का वातावरण हो ताकि दुःख से मुक्ति पाने के लिए अंधविश्वास की चपेट में न आना पड़े।
मेरे इस विषय पर लिखने का कारण है कि मैं बी.एससी. अंतिम वर्ष में हूँ, आदिकाल से पहले तथा आदि काल से अब तक सभी कवियों ने अंधविश्वास का विरोध किया अंधविश्वास छोड़े बिना देश विकसित नहीं हो सकता लेकिन फिर भी समाज में ये जहर की तरह फैल रहा है। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि और संत कबीर ने सही लिखा है की :-

"पाहन पूजै हरि मिले तो मैं पूजूँ पहार।
याते चाकी भली जो, पीस खाए संसार।।"

छत्तीसगढ़ के प्रचलित लोकगीत

कामिनी पटेल
बी.ए. तृतीय वर्ष

पंडवानी : छत्तीसगढ़ का यह विश्वप्रसिद्ध लोक गाथा महाभारत के विभिन्न वीरता प्रसंगों पर आधारित है। गायक तम्बूरा लेकर गाता है साथ ही साथ वह अभिनय भी करता है। गायक के अन्य कलाकार साथी वाद्य यंत्रों की सहायता से सुरताल के संयोजन के साथ मुख्य गायक के साथ गाते भी हैं, और गीत के बीच-बीच में हुंकार भी भरते रहते हैं।

करमा गीत : यह छत्तीसगढ़ के आदिवासियों का मुख्य लोकगीत है। करमा नृत्य के साथ गाये जाने वाले गीत को करमा गीत के नाम से जानते हैं।

गौरा गीत : यह महिलाओं द्वारा नवरात्रि के समय माँ दुर्गा की स्तुति में गाया जाने वाला लोक गीत है।

बरहमासी गीत : इस गीत को गाने के शुरुआत प्रत्येक वर्ष ज्येष्ठ माह में होता है।

जंवारा गीत : यह नवरात्रि के समय गाया जाने वाला माता का गीत है।

गम्मत गीत : यह गीत राज्य में गणेश महोत्सव के समय गाया जाता है। इस गीत में देवी-देवताओं की स्तुति की जाती है।

सुआ गीत : यह गीत स्त्रियों के विरह को व्यक्त करता हुआ प्रतीत होता है। इस गीत की प्रत्येक पंक्ति में स्त्रियाँ सुआना को सम्बोधित करते हुए अपनी आंतरिक वेदना को व्यक्त करती है।

सोहरगीत : जन्म संस्कार विषयक गीत को सोहर गीत कहा जाता है। यह गीत जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर गाया जाता

लेंजा गीत : यह बस्तर के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र का प्रमुख लोक गीत है।

देवार गीत : राज्य की देवार जातियों में गाया जाने वाला यह नृत्य गीत लोक कथाओं पर आधारित होता है।

धनकुल : यह बस्तर क्षेत्र का प्रमुख लोक गीत है।

नगमत गीत : नागपंचमी को गाए जाने वाले इस लोक गीत को गुरु की प्रशंसा के साथ ही नाग देवता का गुणगान तथा नाग देश से सुरक्षा की गुहार में गाया जाता है।

लोरिक चंदा : यह उत्तर भारत की लोकप्रिय प्रेम लोकगाथा है। इसमें लोरिक और चंदा के प्रसंग को क्षेत्रीय विशिष्टता के साथ गाया जाता है। इसे छत्तीसगढ़ में चन्दौनी गायन भी कहा जाता है।

बांस गीत : यह मूलतः एक गाथा है जिसमें गायक रागी और बादक होते हैं। इसमें गाथा गायन के साथ मोटे बांस के लगभग एक मीटर लम्बे सजे-धजे बांस नामक बाद्य का प्रयोग होता है। इसी कारण इसे बांस गीत कहा जाता है।

ददरिया : यह मूलतः एक प्रेम गीत है जिसमें श्रृंगार की प्रधानता होती है। ददरिया दो-दो पंक्ति के स्फुट गीत होते हैं, जो लोक-गीति काव्य के श्रेष्ठ उदाहरण होते हैं।

''सामान्यतः लोक में प्रचलित, लोक द्वारा रचित एवं
लोक के लिए लिखे गये गीतों को लोक गीत कहा जाता है।''

माता-पिता

मेरे लड़खड़ा कर गिरने पर,
माँ ने ही नहीं पिता ने भी संभाला है।
अपनी गोद में बैठाकर माता-पिता,
दोनों ने ही अपने हाथों से खाना खिलाया है।
मेरी सारी गलतियों को भुलाकर मुझे,
हर बार सीने से अपने लगाया है।
हाँ वो मेरे माँ-पापा हैं जिन्होंने,
सारे दुःखों से मुझे बचाया है।
अपनी मंजिल को पाने के लिए,
सबसे डटकर लड़ना यही बताया।
इन्होंने मुझे कठिन परिस्थितियों,
में भी संभलना सिखाया है।
खुद पुराने कपड़े पहन कर,
मुझे नया कपड़ा दिलाया है।
हाँ वो मेरे माँ-पापा हैं जिन्होंने,
सारे दुःखों से मुझे बचाया है।
कभी अगर डाँटा शख्ती से तो,
बाद में प्यार से मनाया है।
सुबह होने पर माँ-पिता,
दोनो ने ही नींद से मुझे जगाया है।
आज मैं कुछ कर सकूँ ,
इस काबिल इन्होंने मुझे बनाया है।
हाँ वो मेरे माँ-पिता हैं जिन्होंने,
सारे दुःखों से मुझे बचाया है।

अमिषा पटेल
बी.एससी. तृतीय वर्ष

हिम्मत

''कोई किसी का नहीं इस जग में ये बात सच ही है,
कोई है तो वो तुम खुद ही हो ये बात भी पक्की है।''
रास्ता खुद ही बनाना है तुम्हें,
मंजिल तक भी खुद हीं पहुंचना है।
क्या होगा अगर ठोकर लग भी गयी,
गिर कर संभलना भी आ जायेगा तुम्हें।
चलते-चलते सफर में एक बात याद रखना,
जो छूटता है वो छूट जाए, सच का साथ कभी न छोड़ना।
आंसू आयेंगे दबे पांव, दस्तक देंगे आँखो में,
उन्हें खुशियों के सौगात समझ कर जी लेना।
हिम्मत हर मुसाफिर की तेज तलवार है,
इसे अपने ध्यान में तैयार रखना।
आसान हो जायेगा तेरे लिए ऊँची-नीची ये डगर,
कामयाबी खुद चूमेगी तेरा रास्ता।

आरती शर्मा
बी.एससी.तृतीय वर्ष

युवा वर्ग पर फैशन का प्रभाव

अन्नु कुशवाहा
बी.एस.सी. द्वितीय वर्ष

भारतीयता को भुलकर कर रहे पश्चिमी अंधानुकरण, नौजवानों सोचो, ये फैशन है या पतन।

प्रातः उठकर बड़ों के पांव छूने में लज्जा आती है, पर शोक सूचक शब्द हाय कहने में शान समझी जाती है।

आधुनिक युग में परिवर्तन का दूसरा नाम ही फैशन है। हर व्यक्ति ही स्मार्ट दिखना चाहता है, अतः फैशन की अंधी दौड़ में शामिल है। फैशन जीवन का आवश्यकता बन चुका है इसी से व्यक्ति समाज में अपना प्रभाव स्थापित कर पाता है, युवा वर्ग तो फैशन का दिवाना ही हैं।इसके स्रोत हैं- सिनेमा के सितारे और विज्ञापन जगत के नये मॉडल। अब लड़कियाँ बाल कटवाती हैं और लड़के बाल बढ़ाते हैं, लड़कियाँ कान के पहने या न पहने किन्तु लड़के एक कान में बाली जरूर पहनते हैं। दोनो ही जींस-टॉप पहनते हैं तो लड़की और लड़के में अंतर करना ही कठिन हो जाता है।

फैशन का प्रभाव व्यक्ति और वस्तु दोनों पर पड़ा है, फैशन से प्रभावित व्यक्ति जीवन में परिवर्तन चाहता है, अतः बाजारवाद हावी होने लगा है। परंपरागत रीति रिवाज नये रंगो में रंगने लगे हैं। वस्तुओं में नवीनता का समावेश होने लगा है। दिवाली में मिट्टी के दिये जलाने या होली टेसू पुष्पों का रंग लगाना भूल चुके हैं लेकिन फादर्स-डे और मदर्स-डे पर अर्चित गैलरी से कार्ड लाने का फैशन हर वर्ष बढ़ रहा है। अब मक्के की रोटी संग सरसों के साग पर पिज्जा, पास्ता और नूडल्स हंसते हैं। चॉकलेट खाना फैशन है क्या हुआ पेट में कीड़े हो गये दवा के नाम पर कोल्ड ड्रिंक पी लेंगे।

देश का यह दुर्भाग्य है कि फैशन के नाम पर हम निरंतर पतन के गर्त में गिरते जा रहे हैं, यहाँ निंदा फैशन की नहीं है। कहते हैं जैसा देश वैसा भेष अतः देश काल की मर्यादा को ध्यान में रख कर ही फैशन करना उचित है। वह फैशन किस काम का जो हमारे संस्कारों को बहा दे, युवाओं को पथभ्रष्ट कर दे। फैशन की तरफ भागती युवा पीढ़ी को यही समझना उचित होगा।

**"सब लोग फैशन वाले ही पोशाक पहनते हैं,
अच्छे तो वही लगते है, जो विनम्र होते है।।"**

हौसला

बुलंद हो होंसला तो मुट्ठी में हर मुकाम है।
मुश्किलें और मुसीबतें तो जिंदगी में आम है।।
जिन्दा हो तो ताकत रखो बाजुओं मे तैरने की,
क्योंकि लहरों के साथ बहना तो लाशों का काम है।
जो इस वक्त मुस्कुरा रहा है, कभी उसे दर्द ने पाला होगा,
और जो इस वक्त चल रहा है, उसके पैरों मे जरुर छाला होगा।
बिना मेहनत के कोई भी चमक नहीं सकता,
जो दिया जल रहा है उसी से ही तो उजाला होगा।

पालन पटेल
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

मेरी ख्वाहिश

पंछी की तरह उड़ जाऊँ मैं,
लोगों से कुछ अलग कर दिखलाऊँ मैं।
आसान जिंदगी तो सब जीते हैं,
कांटो की राह पर चल कर, फूल बनकर दिखलाऊँ मैं।
खुद को कुछ ऐसा बनाऊँ मैं,
कि भीड़ में सबसे आगे निकल जाऊँ मैं।
दुनिया के किसी भी कोने में जाऊँ मैं,
अपनी सूरत से नहीं, हुनर से पहचानी जाऊँ मैं।
सबको एक अपनी रंग दिखाऊँ मैं,
कि दुनिया की आँखों में बस जाऊँ मैं।
हर परीक्षा को पार कर लूँ,
एक दिन आसमान को छू जाऊँ मैं।

कु. पूर्णिमा कुशवाहा
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

मेरा बचपन

वो बचपन का जमाना था,
जिसमें खुशियों का खजाना था।
चाँद को पाने की चाहत थी लेकिन,
दिल तितली का दिवाना था।
वो कोयल की कूकू, वो चिड़ियों
का गाना,
वो नदियों मे, नहरों मे, गोते लगाना।
वो बसंत की हवाएँ, वो गर्मी का मौसम,
आम, अमरुद के पेड़ों पर डेरा जमाना।
वो रंग-बिरंगी पतंगे उड़ाना,
पतंगों के पीछे मीलों भाग जाना,
पतंगों सा उड़नें की चाहत थी लेकिन,
जब उड़ने लगे, हुआ बचपन बेगाना।
वो बारिश के पानी में ठुमके लगाना,
स्कूल न जाने का मिलता नया बहाना,
वक्त भी रोक पाते मिट्टी के बाँध
अगर,
रोक लेते वो बचपन, वो गुजरा जमाना।

चन्द्रावती यादव
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

मैं नारी हूँ

क्या हूँ मैं, कौन हूँ मैं ?
यही सवाल करती हूँ मैं,
तुम नारी हो ? लाचार हो, बेचारी हो ?
बस यही जवाब सुनती हूँ मैं,
अपने सवालों का जवाब मैंने खुद में ही पाया।
लाचार नहीं, बेचारी नहीं मैं, चिंगारी हूँ,
छेड़ो नहीं जल जाओगे, मैं झाँसी की रानी हूँ।
बिन पिता मैं माँ की शेरनी बन लोगों से,
लड़ जाती हूँ, किसी को झाँसी की रानी तो,
किसी को जहर सी लग जाती हूँ।
माता-पिता का अभिमान हूँ, इस देश की शान हूँ,
मैं नारी हूँ, इस देश का आधार हूँ।
कलयुग हो या सतयुग, इल्जाम मुझ पर आता है,
क्यों इन सड़कों पर चलने से मन घबराता है।
आओ मिलकर प्रण करें, आओ मिलकर प्रण करें।
नारी का सम्मान करें, नारी का सम्मान करें।

चाँदनी शर्मा
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

वनों की कटाई पर रोक-थाम

अमित कुमार यादव
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

वनों से हम प्रत्यक्ष रुप से अनेक लाभ प्राप्त करते हैं जैसे - प्रत्यक्ष लाभ स्वरुप हम वनों से इमारती काष्ठ, जलाऊ ईंधन, पशुओं के लिए चारा, गोंद, लाख, फल, जड़ी-बूटियाँ, हवा आदि प्राप्त करते हैं, तो वहीं अप्रत्यक्ष रुप से वन वर्षा, बाढ़ की रोकथाम करते हैं।

आज के समय में लोगों के बीच यह जागरुकता फैलाने की जरुरत है कि जितना पेड़ लगायेंगे उतना ही हम प्रकृति और पर्यावरण को नष्ट होने से बचा सकेंगे। हरी-भरी और खुशहाल प्रकृति का निर्माण वृक्षों पर निर्भर करता है, और आजकल गैर-कानूनी तरीके से वनों की कटाई पर पूर्ण रुप से रोक लगाने की अत्यंत आवश्यकता है।

जंगल पर आधुनिक तकनीक जैसे– ड्रोन की सहायता से नजर रखा जाये।

भारत सरकार और वन विभाग ने वनों के संरक्षण के लिए कई नियम बनाएँ है, लेकिन आज भी वनों की कटाई गैर-कानूनी ढंग से किया जा रहा है, जिसमें जंगल वीरान होते जा रहे हैं, जो मनुष्य जाति और प्रकृति के लिए गंभीर समस्या बनती जा रही है। वनों की कटाई को रोकने के लिए ड्रोन जैसी तकनीक का प्रयोग करना चाहिए, ड्रोन की सहायता से वनों पर नजर रखा जाये इसकी मदद से एक स्थान से कई स्थानों पर एक साथ नजर रखा जा सकता है जिससे वनों की गैर-कानूनी ढंग से हो रहे वनों की कटाई को काफी कम किया जा सकता है।

गाँव के लोगों का ईंधन की समस्या का निवारण।

आज भी गाँवों के एक तिहाई से ज्यादा लोग लकड़ी का उपयोग ईंधन के रुप में भोजन पकाने के लिए करते हैं। इन्हें जागरुक कर L.P.G. गैस या रसोई गैस, बायो गैस, सोलर कुकर इत्यादि का ईंधन के रुप में उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाये।

बायो गैस :-

पशु की गोबर से गैसीय ईंधन तैयार करने के लिए गोबर को विशेष प्रकार से निर्मित गढ्ढे में डाला जाता है, इस गढ्ढे में वायु कि अनुपस्थिति में अपघटित होकर मिथेन, कार्बन डाइऑक्साइड तथा कुछ अन्य गैस प्रदान करता है, गैस के इस मिश्रण को ही ''बायो गैस'' का नाम दिया गया है। प्राप्त गैस को गढ्ढे के ऊपर लगे डोम से पाईप द्वारा बाहर निकाल कर इसका उपयोग कर सकते हैं, इस गैस की तापन क्षमता अत्यधिक होती है जिससे इसे ईंधन के रुप में उपयोग कर सकते हैं। इसके कई अन्य लाभ भी हैं :-

1. बायो गैस का उपयोग प्रकाश के स्त्रोत के रुप में किया जा सकता है।
2. गैस निकालने के बाद बचा अपशिष्ट पदार्थ में नाइट्रोजन तथा फास्फोरस प्रचुर मात्रा में होता है इसलिए यह एक उत्तम खाद के रुप में काम आता है।
3. इसके उपयोग से पर्यावरण प्रदूषित नहीं होता है।

विजय कुमार गुप्ता
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

किसान की शान

यह लेख है उनकी शान,
जिन्होनें दी है देश को जान।
न हारेंगे न ही पीछे हटेंगे,
हरदम रहेंगे तत्पर।
अपना कर्तव्य निभायेंगे,
धरती हरियाली बनायेंगे।
बंजर जमीन पर भी वृक्ष लगाकर
उसे उपजाऊ बनायेंगे।
तुम क्या जानों हमारी ताकत,
बहती नदियों पर बाँध बनायेंगे।
जीवन की गाथा, दुःख की है गाथा।
पर हम क्यों इसे शोक मनायेंगे,
खून पसीना एक करके अपना फर्ज निभायेंगे।
न भूखा रहेगा देश हमारा,
न भूखी रहेगी धरती हमारी,
भरण-पोषण की जिम्मेदारी है हमारी।
हम इस धरती से सोना उपजाकर,
शिक्षा पुत्र को दिलायेंगे।
भारत माँ की रक्षा के लिए,
देश की सीमा पर लायेंगे।
मरते को सहारा देने का शौंक
हक है मुझे कर्तव्य निभाने का,
तुझे नयी जिन्दगी देने का
यह हमारी शान है।
देश में पहचान है,
किसान हमारा नाम है,
जिस पर टिका जहान है,
जो जहान की पहचान है।

अशोक सिंह सरुता
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

प्रकृति श्रृंगार

प्रकृति की महिमा खूब निराली है,
जिसने हमें दी खुशहाली है।
खेलते खाते भूल ही गये,
यह ममता जैसी निराली है।
माँ की ममता गन्दी न हो, ऐसी सोच हमारी है।
सोचने से कुछ नहीं होता,
आगे बची कहानी है।
वृक्ष लगाकर करो श्रृंगार,
यह प्रकृति की श्रृंगार है।
शुद्ध हवा, सुहानी हवा,
लोगों की बड़ी चाह है।
कूडा-करकट, प्लास्टिक, पालिथिन,
प्रकृति के दुश्मन तीन।
सूखा कचरा, गीला कचरा,
हर निगम का नारा है।
कूड़ा-कचरा कूड़ेदान में डालना,
हम लोगों ने यह ठाना है।
स्वच्छ गाँव, स्वच्छ नगर,
स्वच्छ भारत अभियान हमारा।
स्वच्छ प्रकृति, स्वच्छ विचार,
इससे होगा देश का विकास।
हो सके तो समझ लो,
न तो करो कथन पर विचार।
वृक्ष भूमि कर रही पुकार,
वृक्ष लगाकर करो श्रृंगार।
आत्मनिर्भर भारत बनाना है,
जिसमें हाथ आगे बढ़ाना है।
स्वच्छ, समृद्ध, विकसित भारत बनाना है।

आधुनिक नारी

कु. फूलकुंवर
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

ना अबला, ना बेचारी हूँ।
मैं आज के युग की नारी हूँ।।
कम करके मुझको मत आंको।
मैं सारे जग पर भारी हूँ।।
ना अबला, ना बेचारी हूँ।
मैं आज के युग की नारी हूँ।।
सदियों से जो औरों के लिए,
सदियों से अत्याचार सहे।
हर बात की सीमा होती है,
ऐसे घुट-घुट कर कौन रहे।
नहीं डरती हूँ मैं दुनिया से,
अपनों से सदा मैं हारी हूँ।
कम करके मुझको मत आँको,
मैं आज के युग की नारी हूँ।
मैं बाहर काम पर जाती हूँ,
परिवार का हाथ बटाती हूँ।
हर काम में हिस्सा लेती हूँ,
गृहस्थी की गाड़ी चलाती हूँ।
माँ शारदा की वीणा हूँ मैं,
माँ काली की मैं कटारी हूँ।
कम करके मुझको मत आँको,
मैं आज के युग की नारी हूँ।
मन से कोमल ना अबला हूँ,
मैं अपने दम पर सबला हूँ।
तुम जैसे मुझको देखोगे,
लक्ष्मी, काली और दुर्गा हूँ।
संस्कार सभी अपनाती हूँ,
परिवार का मान बढ़ाती हूँ।
कम करके मुझको मत आँको,
मैं आज के युग की नारी हूँ।

परिंदा

रिचा जायसवाल
बी.ए. प्रथम वर्ष

उड़ते-उड़ते आसमान में,
एक परिंदे ने देखा सपना।
सोंचा क्यूँ ना सपने सच कर,
बना लूँ अपना सुंदर आशियाँ।
एक छोटा सा पौधा जिसने,
खुद को सींचा पेड़ बनाया।
अपनी एक-एक साख को जिसनें,
जैसे सपनों का कोई मार्ग बनाया।
उम्मीदों के पंख लगाकर,
आ बैठा वो उसी पेड़ पे।
पूछा क्या कर दोगे ख्वाहिशें पूरी ?
क्या कर दोगे मेरे सपनें पूरे ?
बाहें खोले खड़ा रहा पेड़,
कुछ ना बोला वाणी में।
तिनके तोड़े उसे दे दिया,
और मुस्कान भर बाहों मे।
एक-एक तिनके जोड़-जोड़ कर,
बना लिया वो जब आशियाँ।
उसमें अपने सपनें भर,
इंतजार करता रहा हर पल।
खुशियों के पंख लगा कर,
उड़ने लगा परिंदा एक दिन।
उसके सपने सच हो गये,
उसी पेड़ की डालियों पर।
कभी धूप थी कभी बारिशें,
कभी झोकें हवा के थे।
मजबूत था फिर भी तिनके का
आशियाँ,
सपने जिसमें आस्था और विश्वास
फैले।

लड़की पराई क्यों ?

मनीषा गुप्ता
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

एक है धरा, एक है आधार हमारा,
फिर वो फूल और मैं काँटा क्यों ?
एक है उद्देश्य एक है
मंजिल हमारी,
फिर वो सफल और मैं
असफल क्यों ?
एक है आसमां एक है जमी हमारी,
फिर वो चिराग और मैं बोझ क्यों ?
एक है माता एक है पिता हमारे,
फिर लड़का अपना और लड़की
पराई क्यों ?

ज्ञान

श्रवण कुमार
बी.ए. द्वितीय वर्ष

किताब बिना ज्ञान नहीं,
ज्ञान बिना पहचान नहीं,
पहचान बिना सम्मान नहीं,
इसलिए तो कहते हैं मित्रों,
ज्ञान बिना सफल कोई इंसान नहीं।
तुम चन्दन सी हो मेरे जीवन की कहानी,
बिन तेरे सूनी है जिंदगानी।
ज्ञान बिना मान-सम्मान कहाँ,
और तेरे बिना इंसान इंसान कहाँ।
वीरान सी गलियों मे सूना सा मन,
ज्ञान को पाकर खिल उठा खुशी से मेरा मन।
ज्ञान ही है जीवन के सफलता का एक मात्र सहारा,
बिना ज्ञान के कोई भी नहीं है हमारा।
ज्ञान बिना कोई अपना नहीं,
ज्ञान बिना पूरा होता कोई सपना नहीं।
ज्ञान से दुनिया जहांन है,
ज्ञान से ही तो सफल व्यक्ति की पहचान है।
ज्ञान के बिना सफलता नहीं,
सफलता के बिना कोई पहचान नहीं।
कामयाबी किसी कागज के टुकड़े की मुहताज नहीं,
परिश्रम के बिना किसी के सिर पर ताज नहीं।
लोग कामयाब यूँ ही नहीं हुए है इस जमाने में,
वर्षो परिश्रम लगा उनको सफलता पाने में।
ज्ञान बिना पूरे किसी के अरमान नहीं,
ज्ञान बिना कामयाब कोई इंसान नहीं।

बढ़े-चलो

आशीष कुमार पाण्डेय
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

फूल बिछे हों या काँटे हो,
राह न अपनी छोड़ो तुम।
चाहे जो विपदायें आये,
मुख जरा न मोड़ो तुम।।
साथ रहे या न रहे साथी,
हिम्मत मगर न छोड़ो तुम।
नहीं कृपा की भिक्षा मांगो,
कर न दीन बन जोड़ो तुम।।
बस ईश्वर पर रखो भरोसा,
पाठ प्रेम का पढ़े चलो।
जब तक जान रहे तन में,
तब तक आगे बढ़े चलो।।

प्यारी माँ

''माँ'' शब्द सुनते ही सभी को अपनी माँ की याद आती है, माँ शब्द सुनते ही सभी लोगों के हृदय में आदर और सम्मान की भावना उमड़नें लगती है। माँ शब्द बुरे से बुरे मनुष्य को ईमानदार बना देती है, बच्चे का सबसे अधिक लगाव माँ से ही होता है। हर सुख-दुःख में व्यक्ति माँ को याद करता है, माँ भी सबसे ज्यादा प्यार अपने बच्चों से करती है। हर माँ यह जानती है कि, बच्चों को किस समय कौन सी चीज चाहिए।

बहुत बच्चे ऐसे होते हैं जिन्हें माँ का प्यार नहीं मिलता है, वे बच्चे माँ का प्यार पाने के लिए तड़पते रहते हैं। दुसरों की माँ को देखकर अपनी माँ समझकर प्यार पाने की कोशिश करते हैं। बहुत बच्चे ऐसे होते हैं जो अपनी माताओं से बुरा व्यवहार करते हैं, उन लोगों से मेरा निवेदन है कि माँ की ममता को समझें और उन्हें प्यार करें, किसी ने ठीक ही कहा है -

''सोनार भी हीरे की कीमत तब जानता है, जब हीरा खो जाता है।''

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि संसार की सभी माताओं को ईश्वर खुश रखे और दुनिया की बुराईयों से लड़नें मे उनकी मदद करें। किसी बच्चे के सिर से माँ की ममता का साया ना उठे।

माँ तो आखिर माँ होती है, उस जैसी कोई कहाँ होती है।

अतुल कुमार पटेल
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

मेरे बाबा

बाबा मैं तेरे घर का दिया बन जाऊँ,
फूल बनकर घर को शोभा दिलवाऊँ।
बाबा आपको बहुत दूर जाना है,
चलते हुए राह पर मुझे याद कर लेना।
बाबा मैं तेरे दिल का टुकड़ा हूँ,
पर तेरा हंसता हुआ मुखड़ा हूँ।
बाबा आप जहाँ भी हो खुश रहो,
किसी भी यादों मे गुमसुम रहो।
बाबा घर की बेटियाँ पराई होती हैं,
पर मैं आपकी गुडिया हूँ।
''बेटियों के बिना जीवन बेकार होती है।
बेटियों से ही तो घर परिवार होता है।।''

रीना आयम
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

अंजली पटेल
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

हमारे आदर्श

भावों मे जो है छुपा,
व्यवहारों ने आजमाया।
जीवन जीने की जटिल तमन्ना को,
आदर्शों नें सरल बनाया।
मिलती है जो खुशियों मे भी, गमों मे भी,
जीने के बरसात में भी,
है चाहता किसी दुश्मन को लगालूँ गले प्रेम से,
कर दूँ आदर्शों की भेंट प्रेम से।
घुल जाये जो विद्यार्थी काल में,
बन जाये अनुशासन।
बात हो अगर सरल जीवन की तो,
सुखान्वित हो जीवन।
चले दुनिया जिनके आदर्शों पर,
गाँधीवाद भावना है सीने में।
किया कब परवाह चन्द्रशेखर ने किसी नतीजे की,
गरीबों के पीड़ा को सोखा जिसने है बात उस कलेजे की।
आदर्श जो लेकर चले हमारे अनुशासन,
हमारे संस्कार।
है ये देन हमारे पूर्वजों की।

राष्ट्र गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग।
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा,
उच्छल जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष माँगे;
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।।

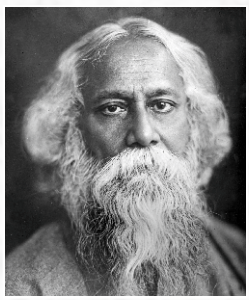

रविन्द्रनाथ टैगोर

छत्तीसगढ़ का राजगीत

अरपा पैरी के धार, महानदी हे अपार
इंदरावती हा पखारय तोर पईयां
महूं पांवे परंव तोर भुँइया
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मईया

सोहय बिंदिया सहीं, घाट डोंगरी पहार
चंदा सुरूज बनय तोर नैना
सोनहा धाने के अंग, लुगरा हरियर हे रंग
तोर बोली हावय सुग्घर मैना
अंचरा तोर डोलावय पुरवईया
महूं पांवे परंव तोर भुँइया
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मईया

रयगढ़ हावय सुग्घर, तोरे मउरे मुकुट
सरगुजा अउ बिलासपुर हे बइहां
रयपुर कनिहा सही, घाते सुग्घर फबय
दुरूग बस्तर सोहय पैजनियाँ
नांदगांव नवा करधनियाँ
महूं पांवे परंव तोर भुँइया
जय हो जय हो छत्तीसगढ़ मईया

डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा

हमारा निवेदन

चलो धरती बचायें पर कैसे?

Suraj Graphix # 7415157000

शासकीय रानी दुर्गावती महाविद्यालय, वाड्रफनगर

जिला - बलरामपुर-रामानुजगंज (छ.ग.)

Web : www.govtcollegewadrafnagar.ac.in

Email : ranidurgawati001@gmail.com